अष्टलक्ष्मि स्तोत्रम्

आदिलक्ष्मि

सुमनसवंदित सुंदरि माधवि
चंद्र सहोदरि हेममये ।
मुनिगणमंडित मोक्षप्रदायिनि
मंजुळभाषिणि वेदनुते ॥
पंकजवासिनि देवसुपूजित
सद्गुणवर्षिणि शांतियुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
आदिलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ १ ॥

धान्यलक्ष्मि

अयि कलिकल्मषनाशिनि कामिनि
वैदिकरूपिणि वेदमये ।
क्षीरसमुद्भव मंगलरूपिणि
मंत्रनिवासिनि मंत्रनुते ॥
मंगलदायिनि अंबुजवासिनि
देवगणाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
धान्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ २ ॥

धैर्यलक्ष्मि

जयवरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि
मंत्रस्वरूपिणि मंत्रमये ।
सुरगणपूजित शीघ्रफलप्रद
ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते ॥
भवभयहारिणि पापविमोचनि
साधुजनाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ३ ॥

गजलक्ष्मि

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि
सर्वफलप्रद शास्त्रमये ।
रथगज तुरगपदादि समावृत
परिजनमंडित लोकनुते ॥
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित
तापनिवारिणि पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
गजलक्ष्मि रूपेण पालय माम् ॥ ४ ॥

संतानलक्ष्मि

अयि खगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि
रागविवर्धिनि ज्ञानमये ।
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि
स्वरसप्त भूषित गाननुते ॥
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर
मानववंदित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
संतानलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ५ ॥

विजयलक्ष्मि

जय कमलासनि सद्गतिदायिनि
ज्ञानविकासिनि गानमये ।
अनुदिनमर्चित कुंकुमधूसर
भूषित वासित वाद्यनुते ॥
कनकधरास्तुति वैभव वंदित
शंकर देशिक मान्य पदे ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
विजयलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ६ ॥

विद्यालक्ष्मि

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि
शोकविनाशिनि रत्नमये ।
मणिमयभूषित कर्णविभूषण
शांतिसमावृत हास्यमुखे ॥
नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि
कामित फलप्रद हस्तयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
विद्यालक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ७ ॥

धनलक्ष्मि

धिमिधिमि धिंधिमि धिंधिमि धिंधिमि
दुंदुभि नाद सुपूर्णमये ।
घुमघुम घुंघुम घुंघुम घुंघुम
शंखनिनाद सुवाद्यनुते ॥
वेदपुराणेतिहास सुपूजित
वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
धनलक्ष्मिरूपेण पालय माम्॥ ८ ॥